जय भवना वाली माँ

जय भवना वाली माँ

जय भोले बाबा

जय मैया जी

अम्मा जी
व
बाऊ जी

श्री दुर्गा मन्त्र

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

सर्व बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितहा।
मनुष्यो मत्प्रसदेना भविष्यति न संशयः॥

।। चण्डी –कवच ।।

अथ चंडीकवच प्रारम्भः ॐ अस्य श्री चंडी कवचस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टपछन्दः चामुंडा देवता।
मातरो बीजंदिग्वंध देवता तत्वं श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठंग़डत्वे पाठ विनयोगः ॥
इस विनियोग को बोल कर आचमनी से जल छोड़ दें और फिर नीचे लिखे कवच का पाठ करें।

ॐ इस श्रीचण्डीकवचके ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासमें कही गयी माताएँ बीज, दिग्बन्ध देवता तत्त्व हैं, श्रीजगदम्बाकी प्रीतिके लिये सप्तशतीके पाठाङ्गभूत जपमें इसका विनियोग किया जाता है।

ॐ चण्डिकादेवीको नमस्कार है।

मार्कण्डेयजीने कहा—पितामह! जो इस संसारमें परम गोपनीय तथा मनुष्योंकी सब प्रकारसे रक्षा करनेवाला है और जो अबतक आपने दूसरे किसीके सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये॥ १॥

ब्रह्माजी बोले—ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवीका कवच ही है, जो गोपनीयसे भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका उपकार करनेवाला है। महामुने! उसे श्रवण करो॥ २॥ देवीकी नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री[१] है। दूसरी मूर्तिका नाम ब्रह्मचारिणी[२] है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा[३] के नामसे प्रसिद्ध है। चौथी मूर्तिको कूष्माण्डा[४] कहते हैं। पाँचवीं दुर्गाका नाम स्कन्दमाता[५] है। देवीके छठे रूपको कात्यायनी[६] कहते हैं।

१-गिरिराज हिमालयकी पुत्री 'पार्वतीदेवी'। यद्यपि ये सबकी अधीश्वरी हैं, तथापि हिमालयकी तपस्या और प्रार्थनासे प्रसन्न हो कृपापूर्वक उनकी पुत्रीके रूपमें प्रकट हुईं। यह बात पुराणोंमें प्रसिद्ध है। २-सच्चिदानन्दमय ब्रह्मस्वरूपकी प्राप्ति कराना जिनका स्वभाव हो, वे 'ब्रह्मचारिणी' हैं। ३-आह्लादकारी चन्द्रमा जिनकी घण्टामें स्थित हों, उन देवीका नाम 'चन्द्रघण्टा' है। ४-त्रिविधतापयुक्त संसार जिनके उदरमें स्थित है, वे भगवती 'कूष्माण्डा' कहलाती हैं। ५-छान्दोग्यश्रुतिके अनुसार भगवतीकी शक्तिसे उत्पन्न हुए सनत्कुमारका नाम स्कन्द है। उनकी माता होनेसे वे 'स्कन्दमाता' कहलाती हैं। ६-देवताओंका कार्य सिद्ध करनेके लिये

सातवाँ कालरात्रि[७] और आठवाँ स्वरूप महागौरी[८] के नामसे प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गाका नाम सिद्धिदात्री[९] है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेदभगवान्‌के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं॥ ३—५॥ जो मनुष्य अग्निमें जल रहा हो, रणभूमिमें शत्रुओंसे घिर गया हो, विषम संकटमें फँस गया हो तथा इस प्रकार भयसे आतुर होकर जो भगवती दुर्गाकी शरणमें प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता। युद्धके समय संकटमें पड़नेपर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भयकी प्राप्ति नहीं होती॥ ६-७॥

देवी महर्षि कात्यायनके आश्रमपर प्रकट हुईं और महर्षिने उन्हें अपनी कन्या माना; इसलिये 'कात्यायनी' नामसे उनकी प्रसिद्धि हुई।७-सबको मारनेवाले कालकी भी रात्रि (विनाशिका) होनेसे उनका नाम 'कालरात्रि' है। ८-इन्होंने तपस्याद्वारा महान् गौरवर्ण प्राप्त किया था, अतः ये महागौरी कहलायीं। ९-सिद्धि अर्थात् मोक्षको देनेवाली होनेसे उनका नाम 'सिद्धिदात्री' है।

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवीका स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो॥ ८॥ चामुण्डादेवी प्रेतपर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसेपर सवारी करती हैं। ऐन्द्रीका वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवीदेवी गरुडपर ही आसन जमाती हैं॥ ९॥ माहेश्वरी वृषभपर आरूढ़ होती हैं। कौमारीका वाहन मयूर है। भगवान् विष्णुकी प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमलके आसनपर विराजमान हैं और हाथोंमें कमल धारण किये हुए हैं॥ १०॥ वृषभपर आरूढ़ ईश्वरीदेवीने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मीदेवी हंसपर बैठी हुई हैं और सब प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित हैं॥ ११॥ इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकारकी योगशक्तियोंसे सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत-सी-देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकारके आभूषणोंकी

शोभासे युक्त तथा नाना प्रकारके रत्नोंसे सुशोभित हैं॥ १२॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोधमें भरी हुई हैं और भक्तोंकी रक्षाके लिये रथपर बैठी दिखायी देती हैं। ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथोंमें धारण करती हैं। दैत्योंके शरीरका नाश करना, भक्तोंको अभयदान देना और देवताओंका कल्याण करना—यही उनके शस्त्र-धारणका उद्देश्य है॥ १३—१५॥ [कवच आरम्भ करनेके पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये—] महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि! तुम महान् भयका नाश करनेवाली हो, तुम्हें नमस्कार है॥ १६॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओंका भय बढ़ानेवाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व

दिशामें ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करे। अग्निकोणमें अग्निशक्ति, दक्षिण दिशामें वाराही तथा नैर्ऋत्यकोणमें खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशामें वारुणी और वायव्यकोणमें मृगपर सवारी करनेवाली देवी मेरी रक्षा करे॥ १७-१८॥

उत्तर दिशामें कौमारी और ईशानकोणमें शूलधारिणीदेवी रक्षा करे। ब्रह्माणि! तुम ऊपरकी ओरसे मेरी रक्षा करो और वैष्णवीदेवी नीचेकी ओरसे मेरी रक्षा करे॥ १९॥ इसी प्रकार शवको अपना वाहन बनानेवाली चामुण्डादेवी दसों दिशाओंमें मेरी रक्षा करे। जया आगेसे और विजया पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करे॥ २०॥ वामभागमें अजिता और दक्षिणभागमें अपराजिता रक्षा करे। उद्योतिनी शिखाकी रक्षा करे। उमा मेरे मस्तकपर विराजमान होकर रक्षा करे॥ २१॥ ललाटमें मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनीदेवी

मेरी भौंहोंका संरक्षण करे। भौंहोंके मध्यभागमें त्रिनेत्रा और नथुनोंकी यमघण्टादेवी रक्षा करे॥ २२॥ दोनों नेत्रोंके मध्यभागमें शङ्खिनी और कानोंमें द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिकादेवी कपोलोंकी तथा भगवती शांकरी कानोंके मूलभागकी रक्षा करे॥ २३॥ नासिकामें सुगन्धा और ऊपरके ओठमें चर्चिकादेवी रक्षा करे। नीचेके ओठमें अमृतकला तथा जिह्वामें सरस्वतीदेवी रक्षा करे॥ २४॥

कौमारी दाँतोंकी और चण्डिका कण्ठप्रदेशकी रक्षा करे। चित्रघण्टा गलेकी घाँटीकी और महामाया तालुमें रहकर रक्षा करे॥ २५॥ कामाक्षी ठोढ़ीकी और सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करे। भद्रकाली ग्रीवामें और धनुर्धरी पृष्ठवंश-(मेरुदण्ड-) में रहकर रक्षा करे॥ २६॥ कण्ठके बाहरी भागमें नीलग्रीवा और कण्ठकी नलीमें नलकूबरी रक्षा करे। दोनों कंधोंमें खड्गिनी और

मेरी दोनों भुजाओंकी वज्रधारिणी रक्षा करे॥ २७॥ दोनों हाथोंमें दण्डिनी और अंगुलियोंमें अम्बिका रक्षा करे। शूलेश्वरी नखोंकी रक्षा करे। कुलेश्वरी कुक्षि-(पेट-) में रहकर रक्षा करे॥ २८॥

महादेवी दोनों स्तनोंकी और शोकविनाशिनीदेवी मनकी रक्षा करे। ललितादेवी हृदयमें और शूलधारिणी उदरमें रहकर रक्षा करे॥ २९॥ नाभिमें कामिनी और गुह्यभागकी गुह्येश्वरी रक्षा करे। पूतना और कामिका लिङ्गकी और महिषवाहिनी गुदाकी रक्षा करे॥ ३०॥

भगवती कटिभागमें और विन्ध्यवासिनी घुटनोंकी रक्षा करे। सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियोंकी रक्षा करे॥ ३१॥ नारसिंही दोनों घुट्टियोंकी और तैजसीदेवी दोनों चरणोंके पृष्ठभागकी रक्षा करे। श्रीदेवी पैरोंकी अङ्गुलियोंमें और तलवासिनी पैरोंके तलुओंमें रहकर रक्षा करे॥ ३२॥ अपनी दाढ़ोंके

कारण भयंकर दिखायी देनेवाली दंष्ट्राकरालीदेवी नखोंकी और ऊर्ध्वकेशिनीदेवी केशोंकी रक्षा करे। रोमावलियोंके छिद्रोंमें कौबेरी और त्वचाकी वागीश्वरीदेवी रक्षा करे॥ ३३॥ पार्वतीदेवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदकी रक्षा करे। आँतोंकी कालरात्रि और पित्तकी मुकुटेश्वरी रक्षा करे॥ ३४॥ मूलाधार आदि कमल-कोशोंमें पद्मावतीदेवी और कफमें चूडामणिदेवी स्थित होकर रक्षा करे। नखके तेजकी ज्वालामुखी रक्षा करे। जिसका किसी भी अस्त्रसे भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्यादेवी शरीरकी समस्त संधियोंमें रहकर रक्षा करे॥ ३५॥

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्यकी रक्षा करें। छत्रेश्वरी छायाकी तथा धर्मधारिणीदेवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धिकी रक्षा करे॥ ३६॥ हाथमें वज्र धारण करनेवाली वज्रहस्तादेवी मेरे प्राण, अपान, व्यान,

उदान और समान वायुकी रक्षा करे। कल्याणसे शोभित होनेवाली भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राणकी रक्षा करे॥ ३७॥ रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श—इन विषयोंका अनुभव करते समय योगिनीदेवी रक्षा करे तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणकी रक्षा सदा नारायणीदेवी करे॥ ३८॥ वाराही आयुकी रक्षा करे। वैष्णवी धर्मकी रक्षा करे तथा चक्रिणी (चक्र धारण करनेवाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्याकी रक्षा करे॥ ३९॥ इन्द्राणि! आप मेरे गोत्रकी रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओंकी रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रोंकी रक्षा करे और भैरवी पत्नीकी रक्षा करे॥ ४०॥ मेरे पथकी सुपथा तथा मार्गकी क्षेमकरी रक्षा करे। राजाके दरबारमें महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहनेवाली विजयादेवी सम्पूर्ण भयोंसे मेरी रक्षा करे॥ ४१॥

देवि! जो स्थान कवचमें नहीं कहा गया है, अतएव रक्षासे रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो॥ ४२॥ यदि अपने शरीरका भला चाहे तो मनुष्य बिना कवचके कहीं एक पग भी न जाय—कवचका पाठ करके ही यात्रा करे। कवचके द्वारा सब ओरसे सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहाँ भी जाता है, वहाँ-वहाँ उसे धन-लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओंकी सिद्धि करनेवाली विजयकी प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तुका चिन्तन करता है, उस-उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वीपर तुलनारहित महान् ऐश्वर्यका भागी होता है॥ ४३-४४॥ कवचसे सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्धमें उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकोंमें पूजनीय होता है॥ ४५॥ देवीका यह कवच देवताओंके

लिये भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओंके समय श्रद्धाके साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकोंमें कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्युसे* रहित हो, सौसे भी अधिक वर्षोंतक जीवित रहता है॥ ४६-४७॥ मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदिका स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदिके काटनेसे चढ़ा हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेलके संयोग आदिसे बननेवाला कृत्रिम विष—ये सभी प्रकारके विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई असर नहीं होता॥ ४८॥ इस पृथ्वीपर मारण-मोहन आदि जितने आभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकारके जितने मन्त्र-यन्त्र होते हैं, वे सब इस

* अकाल-मृत्यु अथवा अग्नि, जल, बिजली एवं सर्प आदिसे होनेवाली मृत्युको 'अपमृत्यु' कहते हैं।

कवचको हृदयमें धारण कर लेनेपर उस मनुष्यको देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं, पृथ्वीपर विचरनेवाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देवविशेष, जलके सम्बन्धसे प्रकट होनेवाले गण, उपदेशमात्रसे सिद्ध होनेवाले निम्नकोटिके देवता, अपने जन्मके साथ प्रकट होनेवाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्षमें विचरनेवाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदयमें कवच धारण किये रहनेपर उस मनुष्यको देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुषको राजासे सम्मानवृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्यके तेजकी वृद्धि करनेवाला और उत्तम है॥ ४९—५२॥ कवचका पाठ करनेवाला पुरुष अपनी कीर्तिसे विभूषित भूतलपर अपने सुयशके साथ-साथ

वृद्धिको प्राप्त होता है। जो पहले कवचका पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डीका पाठ करता है, उसकी जबतक वन, पर्वत और काननोंसहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तबतक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतानपरम्परा बनी रहती है॥ ५३-५४॥ फिर देहका अन्त होनेपर वह पुरुष भगवती महामायाके प्रसादसे उस नित्य परमपदको प्राप्त होता है, जो देवताओंके लिये भी दुर्लभ है॥ ५५॥ वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिवके साथ आनन्दका भागी होता है॥ ५६॥

देवी-कवच सम्पूर्ण

।। चंडी – चरित्र ।।

श्री भाल लसत विशाल शशि मृग मीन खंजन लोचनी ।
बाल वदन विशाल कोमल, वचन विध्न विमोचनी ।। १ ।।
सिंह वाहन धनुष धारण कनक से तन सोहनी ।
मुंड माल सरोज राजत मुनिन के मन मोहनी ।। २ ।।
तू है एक रूप अनेक तेरे गुणन की गिनती नहीं ।
कुछ ज्ञान ही था सुजान भक्तन भाव से विनती करी ।। ३ ।।
वर विष्णु नवधा खड्ग खप्पर अभय अंकुश धारिणी ।
कर काज लाज जहाज जननी जनन के हितकारिणी ।। ४ ।।

मंद हास प्रकाश चंडी सो विंध्यवासिनी गाइये ।
क्रोध तजि अभिमान हर पल दुष्ट बुद्धि नसायिये ॥ ५ ॥
उठत- बैठत चलत सोहत बार-बार मनाईये ।
चंड मुंड विनाशिनी के चरण हित चित लाईये ॥ ६ ॥
चरण मुनि और बिंदु हु ते अधिक आनंद रूप है ।
सर्व सुख दाता विधाता सर्व दर्श अनूप है ॥ ७ ॥
तू ही योग भोग विलासिनी शिव पास हिमगिर नंदिनी ।
तुरंत दुःख निवारिणी जगतारिणी अभिनन्दिनी ॥ ८ ॥
आदि माया ललित काया प्रथम मधुकैटव नभ छले ।
त्रिभुवन भार उतारिवे को मान महिषासुर मले ॥ ९ ॥

इन्द्र चन्द्र कुबेर बंधन सुरन के आनंद भये ।
भुवन चौदह दशों दिशन के सुनत ही सब दुःख गए ॥ १० ॥
धूम्र लोचन भस्म कीन्हो क्रोध की हुंकार से ।
हनी है सेना सकल ताकि सिंह की फुफकार से ॥ ११ ॥
चंड मुंड प्रचंड दोनों प्रबल से वे भ्रष्ट है ।
मुंड उनके किये खंडन असुर मुंडन दुष्ट है ॥ १२ ॥
रक्त बिजासुर अधर्मी कुकर्मी घन घोर के ।
शौरकर लड़ने को धायो अपना रणदल जोड़ के ॥ १३ ॥
श्री भवानी युद्ध ठानी सकल शक्ति बुलाय के ।

योगनिन को रक्त पीयाओ अंतरिक्ष उठाय के ॥ १४ ॥

महामूढ़ निशुम्भ योद्धा हनो है खड्ग बजाय के।

सुनत ही राज शुम्भ धायो सैन सकल सजाय के ॥ १५॥

परस्पर जब युद्ध माचो दिवस से रजनी भई ।

हास कारन असुर मारो पुष्प घन बरसा भई ॥ १६ ॥

चित लाय यह चंडी- चरित्र पढ़े और प्रेम से सदा ।

पुत्र मित्र कलत्र सुख हो दुःख न आवे ढिंग कदा ॥ १७॥

भक्ति मुक्ति सुबुद्धि बहु धन-धान्य सुख संपत्ति मिले ।

शत्रु नाश प्रकाश चंडी आनंद मंगल नित करे ॥ १८ ॥

।। श्री दुर्गा चालीसा ।।

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी।
निराकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूं लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला।
रूप मातु को अधिक सुहावै, दरश करत जन अति सुख पावै।
तुम संसार शक्ति मय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्नपूरना हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला।
प्रलयकाल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं, ब्रहमा विष्णु तुम्हें नित ध्यावै।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़कर खम्बा।

रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं।
क्षीरसिंधु में करत विलासा, दयासिंधु दीजै मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी।
मातंगी धूमावति माता, भुवनेश्वरि बगला सुख दाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणी, क्षिन्न भाल भव दुख निवारिणी।
केहरि वाहन सोह भवानी, लांगुर वीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड्ग विराजै, जाको देख काल डर भाजै।
सोहे अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।
नाग कोटि में तुम्हीं विराजत, तिहुं लोक में डंका बाजत।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे।

महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अधिभार मही अकुलानी।
रूप कराल काली को धारा, सेना सहित तुम तिहि संहारा।
परी गाढ़ संतन पर जब-जब, भई सहाय मात तुम तब-तब।
अमरपुरी औरों सब लोका, तव महिमा सब रहे अशोका।
बाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो जस गावैं, दुख दारिद्र निकट नहिं आवै।
ध्यावें जो नर मन लाई, जन्म मरण ताको छुटि जाई।
जागी सुर मुनि कहत पुकारी, योग नहीं बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर अचारज तप कीनो, काम अरु क्रोध सब लीनो।
निशदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी।

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा।
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावै, रिपु मूरख मोहि अति डरपावै।
शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि सिद्धि दे करहुं निहाला।
जब लगि जियौं दया फल पाउं, तुम्हरो जस मैं सदा सनाउं।
दुर्गा चालीसा जो गावै, सब सुख भोग परम पद पावै।
देवीदास शरण निज जानी, करहुं कृपा जगदम्ब भवानी।

दोहा

शरणागत रक्षा करे, भक्त रहे निशंक।
मैं आया तेरी शरण में, मातु लीजिए अंक।।

।। श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा ।।

दोहा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्तजनों के काज में करती नहीं विलम्ब।

जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदित भवानी।
सिंहवाहिनी जय जग माता, जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी, जय जय असुरासुर सेवी।
महिमा अमित अपार तुम्हारी, शेष सहस्र मुख वर्णत हारी।
दीनन के दुख हरत भवानी, नहिं देख्यो तुम सम कोई दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अमित जग विख्याता।

जो जन ध्यान तुम्हारो लावे, सो तुरतहिं वांछित फल पावै।
तू ही वैष्णवी तू ही रुद्राणी, तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।
रमा राधिका श्यामा काली, तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला, बेगि मोहि पर होहु दयाला।
तू ही हिंगलाज महारानी, तू ही शीतला अरु विज्ञानी।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता, तू ही लक्ष्मी जग सुख दाता।
तू ही जाह्नवी अरु उत्राणी, हेमावती अम्बे निरवाणी।
अष्टभुजी वाराहिनी देवी, करत विष्णु शिव जाकर सेवा।
चौसठ देवी कल्यानी, गौरी मंगला सब गुण खानी।
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी, भद्रकाली सुन विनय हमारी।
वज्र धारिणी शोक नाशिनी, आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।

जया और विजया बैताली, मातु संकटी अरु विकराली।
नाम अनन्त तुम्हार भवानी, बरनै किमि मानुष अज्ञानी।
जापर कृपा मातु तव होई, तो वह करै चहै मन जोई।
कृपा करहुं मोपर महारानी, सिद्ध करिए अब यह मम बानी।
जो नर धरै मात कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याना।
विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै, जो देवी का जाप करावै।
जो नर कहं ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करै शतबारा।
निश्चय ऋण मोचन होइ जाई, जो नर पाठ करै मन लाई।
अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावै, या जग में सो अति सुख पावै।
जाको व्याधि सतावे भाई, जाप करत सब दूर पराई।
जो नर अति बन्दी महं होई, बार हजार पाठ कर सोई।

निश्चय बन्दी ते छुटि जाई, सत्य वचन मम मानहुं भाई।
जा पर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहिं सुमिरै सोई।
जा कहं पुत्र होय नहिं भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
पांच वर्ष सो पाठ करावै, नौरातन में विप्र जिमावै।
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी, पुत्र देहिं ताकहं गुण खानी।
ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै, विधि समेत पूजन करवावै।
नित्य प्रति पाठ करै मन लाई, प्रेम सहित नहिं आन उपाई।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
यह जनि अचरज मानहुं भाई, कृपा दृष्टि तापर होइ जाई।
जय जय जय जग मातु भवानी, कृपा करहुं मोहिं पर जन जानी।

।। देवी प्रार्थना ।।

मैया तू ही करेगी प्रतिपाल, ना मुझ को और सहारा री ।
मैया दीन हूँ हीन अनाथ, मै होकर दुखी पुकारा री । १ ।।
मैया सारे देवों का मिल तेज, यह बना शरीर तुम्हारा री ।
मैया अष्ट भुजी तेरा रूप, वाहन है सिंह करारा री ।। २ ।।
मैया चक्र गदा त्रिशूल, लिए बरछी और दुधारा री ।
मैया धनुष बाण कर धार, तू गरजे दे हूँकारा री ।। ३ ।।
मैया कौन कोप सके ओट, लाख थर्रावे जग सारा री ।
मैया धार भयंकर रूप, झट महिषासुर को मारा री ।। ४ ।।
मैया चंड मुंड दिए मार, और रक्त बीज मही डारा री ।
मैया शुन्भ निशुम्भ विदार, दल असुरों का संहारा री ।। ५ ।।
मैया मेरा है कौन कसूर, जो मुझको आज बिसारा री ।
मैया हो अगर कोई अपराध, उसे दिल से कर दे न्यारा री ।। ६ ।।

मैया पूत कुपातर होय, माता ना करे किनारा री ।
मैया लो सुन करुण पुकार, है जग में तेरा पसारा री ॥ ७ ॥
मैया बीच भंवर मेरी नाव, ना दीखे कोई किनारा री ।
मैया जिसने शरण लेई आय, उसका काज सुधारा री ॥ ८ ॥
मैया वीर रूप निज धार, ले कर में आज कटारा री ।
मैया देओ हमारे रिपु मार, हम करें तेरा जयकारा री ॥ ९ ॥
मैया कीने बड़े-२ काज, यह काज क्या मेरा भारा री ।
मैया दुश्मन रहे हैं सिर गाज, तू उनकी करदे मारा री ॥ १० ॥
मैया तेरी दया की मुझको चाह, मै घिर आफत से हारा री ।
मैया कर-कर कोप कराल, दल दुश्मन करदे गारा री ॥ ११ ॥
मैया मुझको तो तेरा ही आधार, कर बेडा पार हमारा री ।
मैया कर दो दया भरपूर, दे लगा विजय का नारा री ॥ १२ ॥

मैया होकर निपट अधीर, यों करता अर्ज दोबारा री ।
मैया फेरो दया की दृष्टि आप, हो रक्षा मिले उबारा री ॥ १३ ॥
मैया सारे विध्न देओ टार, चमका दो मेरा सितारा री ।
मैया दो धन यश बल मान, सेवक ने हाथ पसारा री ॥ १४ ॥
मैया आनंद का कर मेरे राज़, सुत अपना समझ पियारा री ।
मैया दिव्य दरश दो आज, हो मेरा झट निस्तारा री ॥ १५ ॥
मैया पूरी विधि से यह पाठ, जो करता भक्त तिहारा री ।
मैया हो सुख विविध प्रकार, मिले रंज से छुटकारा री ॥ १६ ॥
मैया द्वार पडा हूँ आय, है सेवक तेरा दुलारा री ।
मैया खुश होके देओ वरदान, आनंद का बजे नगारा री ॥ इति ॥

।। आरती दुर्गा जी की ।।

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निश दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको॥
कनक समान कलेवर रक्तांबर राजे।
रक्तपुष्प की माला कंठन पर साजे॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी॥
कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।

कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥
शुंभ-निशुंभ बिदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती॥
चंड-मुंड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥
चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू॥

तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख संपति करता॥
भुजा चार अति शोभित वरमुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर-नारी॥
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई निर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पत्ति पावे॥
बोलो अम्बे मैया की जय
बोलो दुर्गे मैया की जय

।। आरती श्री देवी जी की ।।

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
तेरे भक्त जनो पर माता भीर पड़ी है भारी ।
दानव दल पर टूट पडो माँ करके सिंह सवारी ॥
सौ-सौ सिहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ॥
माँ-बेटे का है इस जग मे बडा ही निर्मल नाता।
पूत-कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,

दुखियों के दुखडे निवारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ॥
नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।
हम तो मांगें तेरे चरणों में छोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को सवांरती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ॥
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली ।
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली ॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ॥

।। आरती ।।

आरती जग जननी तेरी गाऊँ।

तुम बिन कौन सुने वर दाती ।

किसको जाकर विनय सुनाऊँ ॥ आरती .....

असुरों ने देवों को सताया, तुमने रूप धरा महामाया।

उसी रूप के दर्शन चाहूँ ॥ आरती.....

रक्त बीज मधु कैटव मारे, अपने भक्तों के काज सवारें।

मै भी तेरा दास कहाऊँ ॥ आरती.....

आरती करूँ वरदाती, ह्रदय का दीप नैनो की बाती ।

निस दिन प्रेम की ज्योत जगाऊं ॥ आरती.....

ध्यानु भक्त तुम्हारा यश गाया, जिस ध्याया माता फल पाया ।

मै दर तेरे सीस झुकाऊं ॥ आरती.....

आरती तेरी जो कोई गावे, 'राधे' सभी सुख संपत्ति पावे ।

मैय्या चरण कमल रज चाहूँ ॥ आरती.....

।। भोग ।।

भोगों ही भोगों ए माँ भोगों ही भोगों मेरी अबला माँ तैं
मेरा मन युं ही पतियायो -
सोने का थाल छत्तीसों व्यंजन माँ मग सेवा पकवान मिठाई
बथुए की भाजी मैया सर्वस्व बनाई खीर खांड देवा और मिठाई
भोजन करो जगतारन माँ तैं मेरा मन यूँ ही पतियायो
ए माँ भोगों ही भोगों-
सोने का घड़वा गंगाजल पानी ऐसा ठंडा २ पानी अच्छा
मीठा-२ पानी ए माँ पियो ३ मेरी आदि भवानी माँ आशा देवी
मनसा देवी कालिका भवानी माँ नगर कोट की रानी माँ
काली महारानी ए माँ आचमन लेओ तैं मेरा मन यूँ ही पतियायो
ए माँ भोगों ही भोगों-

नागर पान का बीड़ा बनाई माँ कत्था सुपारी चुना लौंग इलाइची
माँ बेला चमेली के हार गुथाये माँ बीड़ा लो हार पहनो
जगतारन माँ तै मेरा मन यूँ ही पतियायो
ए माँ भोगों ही भोगों-
भोले भक्त तेरा भोग ले आए हमसे गरीब तेरा भोग ले आए
भक्त प्यारे तेरा भोग ले आए ऐसे संतो का दाना संत प्यारों का दाना
भोले भक्तों का दाना निपट गरीबो का दाना भक्त प्यारों का दाना
ए री माँ ले क्यों न लेओ तै मेरा मन यों ही पतियायो
ए माँ भोगों ही भोगों-

।। मन्त्र पुष्पाञ्जलि ।।

ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यसम् तेहनानकं महिमान
सचन्त यच पूर्वे साध्या सन्ति देवाः ।
या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मी, पापात्मना कृतधियां हृदयेषु बुद्धि ।
शूध्दा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नता स्मपरिपालय देवि विश्वम् ।।
दुर्गे स्मृता ह्रीरसि भितिमषेश जन्तो, स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभांददासि ।
दारिद्र दुखभयहारिणीकात्वदन्ता, सर्वोपकार करनायसदार्द्र चिन्ताया ।।
सेवन्तिका बकुल चम्पक पाठलाज्वै, पुन्नाग जाति करबीर रसाल पुष्पै ।
बिल्ब प्रबाल तुलसीदल मन्जरीभि, त्वाम् पूजयामि जगदीश्वरी मे प्रसीद ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव ।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ।।

।। श्री हनूमते नमः।।

।। श्री हनुमान चालीसा ।।

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहुं कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।, जय कपीस तिहुं लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा।, अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी।, कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा।, कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।, कांधे मूंज जनेउ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन।, तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर।, राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।, राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।, बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे।, रामचन्द्र के काज संवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये।, श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।, तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।, नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहां ते।, कबि कोबिद कहि सके कहां ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।, राम मिलाय राजपद दीन्हा॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।, लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू।, लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।, जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते।, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे।, होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।, तुम रच्छक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै।, तीनों लोक हांक तें कांपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवैं।, महाबीर जब नाम सुनावै॥

नासै रोग हरै सब पीरा।, जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै।, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा।, तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोइ लावै।, सोई अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा।, है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे।, असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।, अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा।, सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै।, जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंत काल रघुबर पुर जाई।, जहां जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई।, हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥

संकट कटै मिटै सब पीरा।, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं।, कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई।, छूटहिं बंदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।, होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा।, कीजै नाथ हृदय महं डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥
॥इति॥

जय श्री राधा–कृष्ण

श्री महाकाली मंदिर

719, नई बस्ती, कटरा नील
चाँदनी चौक, दिल्ली – 110 006

मुल्य
प्रतिदिन पाठ